श्री लक्ष्मी चालीसा

मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास
मनोकामना सदि्ध करि पुरवहु मेरी आस
यही मोर अरदास हाथ जोड़ वनिती करूँ
सबवधिि करो सुवास जय जननि जगदंबकिा |

सनि्धु सुता मैं सुमरिौं तोही,ज्ञान बुध्दि वदि्या दो मोहि|
तुम समान नही कोई उपकारी सब वधि पुरबहु आस हमारी |

जय जय जगत जननि जिगदम्बा। सबकी तुम ही हो अवलम्बा॥
तुम ही हो सब घट घट वासी। वनिती यही हमारी खासी॥
जगजननी जय सनि्धु कुमारी। दीनन की तुम हो हतिकारी॥
वनिवौं नति्य तुमहिं महिारानी। कृपा करौ जग जननि भवानी॥
केहि विधि स्तुति करौं तहिारी।सुधि लीजै अपराध बसिारी॥
कृपा दृष्टि चितिवो मम ओरी। जगजननी वनिती सुन मोरी॥
ज्ञान बुद्धि जिय सुख की दाता। संकट हरो हमारी माता॥
क्षीरसनि्धु जब वषि्णु मथायो। चौदह रत्न सनि्धु में पायो॥
चौदह रत्न में तुम सुखरासी। सेवा कयिो प्रभु बनि दासी॥
जब जब जन्म जहां प्रभु लीन्हा। रुप बदल तहं सेवा कीन्हा॥
स्वयं वषि्णु जब नर तनु धारा। लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा॥
तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं। सेवा कयिो हृदय पुलकाहीं॥
अपनाया तोहि अन्तर्यामी। वश्वि वदिति त्रभिुवन की स्वामी॥
तुम सम प्रबल शक्ति निहीं आनी। कहं लौ महमिा कहौं बखानी॥
मन क्रम वचन करै सेवकाई।मन इच्छति वांछति फल पाई॥
तजि छिल कपट और चतुराई|पूजहिं विविधि भांति मिनलाई॥
और हाल मैं कहौं बुझाई|जो यह पाठ करै मन लाई॥
ताको कोई कष्ट न होई|मन इच्छति पावै फल सोई॥
त्राहि त्रािहि जिय दुःख नवािरनिि|त्रविधि ताप भव बंधन हारणिी॥
जो यह चालीसा पढ़ै पढ़ावै। ध्यान लगाकर सुनै सुनावै॥
ताकौ कोई न रोग सतावै। पुत्र आदि धिन सम्पत्ति पावै॥
पुत्रहीन अरु संपति हीना। अन्ध बधरि कोढ़ी अति दीना॥
वपि्र बोलाय कै पाठ करावै।शंका दलि में कभी न लावै॥
पाठ करावै दनि चालीसा। ता पर कृपा करैं गौरीसा॥
सुख सम्पत्ति बिहुत सी पावै। कमी नहीं काहू की आवै॥
बारह मास करै जो पूजा। तेहि सिम धन्य और नहिं दूजा ॥
प्रतदिनि पाठ करै मन माही। उन सम कोइ जग में कहुं नाहीं॥
बहुवधि किया मैं करौं बड़ाई। लेय परीक्षा ध्यान लगाई॥
करि विश्विास करै व्रत नेमा। होय सदि्घ उपजै उर प्रेमा॥
जय जय जय लक्ष्मी भवानी। सब में व्यापति हो गुण खानी॥
तुम्हरो तेज प्रबल जग माहीं। तुम सम कोउ दयालु कहुं नाहिं॥
मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै। संकट काटि भक्ति मोहि दीजै॥
भूल चूक करि क्षमा हमारी।दर्शन दजै दशा नहिारी॥
बनि दर्शन व्याकुल अधकिारी। तुमहि अछत दुःख सहते भारी॥
नहिं मोहिं ज्ञान बुद्धि है तन में। सब जानत हो अपने मन में॥
रुप चतुर्भुज कर [illegible] ब करहु नविारण॥

केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई। ज्ञान बुद्धि मोहि नहिं अधिकाई॥

त्राहि त्राहि दुख हारिणी, हरो वेगि सब त्रास। जयति जयति जय लक्ष्मी, करो शत्रु को नाश ॥
रामदास धरि ध्यान नति, विनय करत कर जोर। मातु लक्ष्मी दास पर, करहु दया की कोर॥